~~ रंजन प्रकाश
___ संस्थापक/संचालक "भोजपुरी साहित्यांगन"
www.bhojpurisahityangan.com

" राह चलत मुलाकात हो गइल "

राह चलत मुलाकात हो गइल, भोजपुरी से बात हो गइल
जवन बात लुकाइल रहल, उ अब खुला किताब हो गइल।

पूछनी हम भोजपुरी से, अबो तू काहें भटकत बाड़
का तोहरा मालूम नइखे, जे हमरा से पूछत बाड़

भोजपुरी के उलटा सवाल से, पहिले त हम चकरइनी
बचे के ना लउकल राह, ढिठाई से बात बढ़वनी

सभे जोर लगवले बा, का लेखक आ का गायक
देखत नइख लागल बा सभे, का नेता आ का नायक

देखत बानी लागल बा सभे, हमरा के संवारे में
तबो काहें भटकत बानी हम, भाषा बीच बजारे में

पीछे लोग त बड़ले बा, तनी तूहूँ जोर लगाव
कतहूँ कवनो कमी लउके, हमके तू बतलाव

गायक लोग से मिल के देख, ना बाबा ओजा ना जायेम
जवनो इज़्ज़त बांचल बा, जाके ना हम लुटवायेम

बात तोहार त ठीके बा, आव फेर कवि सम्मलेन में
ओजा आ के का करब हम, खाली घूमें खातिर शहरन में

फेर एक बार मिल नेतवन से, शायद बन जाए बात
के जाई ओकनी के बीच, खाए धक्का मुक्की लात

बुढ़वा मंगर के सभे जुटी, तुहूँ थोड़ा सा कष्ट उठाव
देख हमनी के कोशिश, अबकी 'जंतर-मंतर' पर आव

ई पहिला बेर त बावे ना, का देखीं हम 'जंतर-मंतर' के
जादू टोना बेअसर बा, भाव बदलल बा 'जंतर-मंतर' के

ना जाने कबसे उलझल बानी, हम भाषा बीच लड़ाई में
तबो बात बनत नइखे , अबहिंयो मामला बा खटाई में

हमके काहें के दउरावत बानीं, चलीं हमरा संगे गांव
लोग हमरा पर सूते हमरा के ओढ़े, ओहिजे मिली ठांव

राह चलत मुलाकात हो गइल, भोजपुरी से बात हो गइल
जवन बात लुकाइल रहल, उ अब खुला किताब हो गइल।

----*----